International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

" मृदुला गर्ग के ' मैं और मैं ' उपन्यास के संदर्भ में "

प्रा. विद्या बाबूराव खाडे
कला महाविद्यालय नांदुरघाट, ता. केज जि. बीड 431126
Corresponding Author- **प्रा. विद्या बाबूराव खाडे**
ईमेल :vidhyadalave@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7070806

सारांश

प्रेम एक ऐसा तत्व है, जो मनुष्य जीवन में केंद्रीय भूमिका निभाता है। कुछ लोगों के अनुसार प्रेम एक साधारण शब्द है ,पर जब कोई इसका सही अर्थ जान ले तो यह विशिष्ट हो जाता है। स्त्री- पुरुष के संबंधों में इस प्यार का विशेष स्थान है। स्त्री- पुरुष का आपसी आकर्षण में प्यार होता है । जहाँ पहले प्रेम पर पुरुषों का एकाधिकार था वहाँ अब दोनों का अधिकार माना जाने लगा। प्रेमी प्रेमीका का एक दुसरे के प्रति परिपक्व और सच्चा प्यार पुरी तरह आजाद पुरुष तथा पुरी तरह आजार स्त्री के बीच संभव है। आजकल पत्र पत्रिकाओं में भी शरीर सम्बन्धों यौन की चर्चा आम है। आधुनिकता के दौर में पढें लिखें समझदार लोग इस बात को बडी बात नही मानते है। विवाहपूर्व प्रेम - संबंधो की चर्चा जब विवाहोत्तर प्रेम संबंधों को भी मान्यता दि जाने लगी है। जैनेंद्र ने अपने उपन्यासों में चित्रित प्रेमी - प्रेमिकाओं की स्थिति से अवगत कराया है। उससे मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित प्रेमी प्रेमिकाओं की स्थिति काफी भिन्न है। " विचार के स्तर पर मृदुला गर्ग ने प्रेम को अशरीरी माना है । उसकी परमगति प्रेमी से एकात्मक होने में है, एक शरीर होने में नही । आत्मा का तब इतना घनिष्ठ समागम हो जाता है कि एक - दूसरे की उपस्थिती - अनुपस्थिती महत्त्वहीन हो उठती है। " 1 जब समाज के नैतिक बन्धनों के कारण कोई प्रेमी शरीर संबंध स्थापित नही कर पाता तो वह प्रेम अशरीरी है। यह वे स्वीकार नही करती । क्योंकि वे भोग- लिप्सा और संभोग में कोई अंतर नही। मानती वे प्रेम का आदर्श रूप उसे स्वीकार करती है जो प्रेम सामाजिक दबावों से पुरी तरह मुक्त होकर सहज विकास को प्राप्त करे । ऐसी ही स्थिती उनके उपन्यासों में पायीं जाती है।

मैं और मैं :

' मैं और मैं ' एक नये *विषय और* नये कथ्य को लेकर लिखा गया उपन्यास है। एक स्त्री लेखिका के दोहन , शोषण और संघर्ष की यह कहानी है। एक ग्रहणी के रूप मे यह " मैं " घर और परिवार की जिम्मेदारीयों का दहन करती है और एक लेखिका के रूप में लेखन के दायित्वों का भी निर्वाह करती है।

लेखिका के रूप मे यह स्त्री अपनी महत्वकांक्षाओ की पूर्ती मे एक धूर्त मक्कार पुरुष के चक्कर मे कैसे फँसती है और कैसे आर्थिक व मानसिक शोषण का शिकार होती है और अंत मे इस शोषण के चक्र मे से किस तरह बाहर निकलती है इसको बडे ही सधे हुए ढंग से लेखिकाने उभारा है। स्त्री को अबला और बेवकूफ मानकर उसके साथ मनमानी करने वाले उसे ठग्ने वाली , उस पर चौतरफा आक्रमण करने वाले एक धुर्त सियार या भेडिये की कहानी है। इस रूप में मृर्दुला जी के अन्य उपन्यासों के कथ्य स्त्री के रटे- रटाएँ दुखडों , स्त्री - पुरुष संबंधों से अलग हटकर एक लेखिका के जीवन को लेकर लिखा गया यह एक विशिष्ट उपन्यास है। " मृदुला गर्ग के इस उपन्यास को

कुछ लोगों ने सृजन की लंबी छलाँग कहा है । " 2 एक कामकाजी महिला किस प्रकार पुरुषों को अपने चारों और पाती है हालांकि उसकी अपनी महत्त्वकांक्षाएँ ही उसे फँसाती चली जाती है। लेखिका यही दिखाना चाहती है।

मृदुला जी ने ' मैं और मैं ' में माधवी और कौशल के माध्यम से प्रेम की अभिव्यक्ती नये ढंग से प्रस्तुत की है । मृदुला जी के उपन्यासों में प्रायः यह देखा गया है कि नायिका प्रेम संबंधों में उलझी रहती है ।' मैं और मैं ' में नायिका माधवी तथा प्रेमी कौशल के एकतरफा प्रेम जाल मे फँसी है। माधवी एक आदर्श एवं समर्पित पत्नी के रूप मे हमारे सामने आती है एकतर्फा प्रेम माधवी को सबकुछ रहने के लिए तयार कर लेता है। उद्योगपती राकेश पती के साथ लेखिका माधविका विचार सामंजस्य नही है ।इसी कारण माधवी कौशल नामक एक लेखक की और न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाती है। स्वयं माधवी के शब्द से यह आकर्षण स्पष्ट होता है । " जो आदमी उसकी रचना को इतनी सूक्ष्मता से समझ गया है, क्या उसे नही समझ पायेगा? कितना कुछ है जो कभी किसी से कहा नही , राकेश से भी नही । या कहा है , राकेश ने सुना नही ।

इससे पहले इस तरह एकाकी पन का अनुभव नही हुआ । यह कौन- सी गाँठ खोल दी इस अजनबी ने उसके भीतर कि अचानक अकेले सोचना भारी पडने लगा । " 3 माधवी सिर्फ अपने मानसिक आवश्यकता को पुरा करने के लिए कौशल कुमार की और आकृष्ट होती है । परंतु कौशल उसकी भावुक प्रवृति और अमीरी फायदा उठाता है और अपनी मीठी बातों से प्रभावित करके उसे अपने समीप लाने की कोशिश मे कामयाब होता है।

असुंदर के सम्मुख समर्पण करने की शक्ती स्त्री मे ही होती है । पुरुष कुरूप को नष्ट करके स्व को सुरक्षित रखना भर जानता है । इसलिये तो बार-बार पराजित होता है । और स्त्री जो सुंदर है , कुत्सित है , घृणित है, उसे गले लगा लेता है , उसमे विलीन हो जाता है , अपने को मिटा कर स्व का विसर्जन करके पूर्ण रूप से विजयी हो जाती है।

कौशल माधवी की प्रशंसा करके अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उसकी सहानुभूती का इस्तेमाल करता हैं । माधवी भीतर ही भीतर घृणा और जुगुप्सा के बावजूद कौशल की गिरफ्त, प्रलोभनों में खिंचती चली जाती हैं । कौशल कभी माधवी की नारी सुलभ करुणा जगा कर , कभी उसकी आत्याधिक प्रशंसा का नशा चढाकर, कभी उसे व्यावसायिक लाभ प्रलोभन देकर निरंतर उससे पैसा ऐठता रहता है । कौशल और माधवी की बढते हुए संबंधों का प्रमुख कारण दोनों के लिए एक दुसरे की अनिवार्यता हैं । कौशल को पैसा चाहिए और माधवी माधवी को प्रशंसा

कौशल की दृष्टीने माधवी क्या है - उसी शब्दों में - " खूब औरत हैं बेवकूफ और खूबसूरत । बेहद प्यारी चीज । बेवकूफ खूबसूरत औरत तिस पर पैसे वाली और पैसे के मामले में भी बेवकूफ । इस प्यारे मिश्रण मे संॅभावनाएँ ही सँभावनाएँ हैं । " 4 धूर्त कौशल माधवी की नस - नस से परिचित हो जाता है। वह माधवी के प्रेम के काल्पनिक जगत में रहने लगता है। धीरे- धीरे माधवी को पाना उसका एक मात्र लक्ष हो जाता है । प्रथम बार कौशल को देखने पर माधवी के मन में कौशल की बदसूरती देखकर घृणा पैदा होती है । माधवी कौशल को न स्वीकार कर पाती है न नकार ही पाती है । कौशल के प्रति संवेदनशील माधवी कौशल के फोन की भी प्रतीक्षा करती है । उसे वह राह देती है रहती है और कौशल उसे अपने वाग्जाल में फसता रहता है । कौशल के मन मे माधवी के प्रती एकतरफा प्रेम भी निर्माण होता हैं । उसके आत्याधिक निकट आने की कोशिश भी वह करता है और आकर्षण अधिक बड जाता है। कौशल का भेडिया रूप हर क्षण माधवी का पीछा करता रहता है। झूठ बोलकर पैसा माँगते समय भी उसको

शर्म नही आती । " कौशल कुमार की आँखे तो चमक रही है जैसे प्रतिद्वंद्वी पर तलवार का वार तो तौल रही हो । " 5 वह इतना धूर्त हैं कि बार-बार चापलूसी करके माधवी के शरीर का स्पर्श पाना चाहता है । माधवी भी उसके प्रति सहानुभूती से युक्त होकर यह सोचती है कि , " छुने भर से इतना परहेज़ क्यों? वह केवल एक स्त्री ही नही व्यक्ती भी है ? " 6 उसके बालों पर हाथ फेरती है।

कौशल अपनी हर नयी मुलाकात में माधवी के अधिक निकट आता है। माधवी के हाथों को कौशल पकड लेता है और चूमने लगता है । माधवी को यह अच्छा नहीं लगता। नकारते हुए कहती हैं -' निकल जाइये मेरे घर से ' इतना तिरस्कार करने पर भी कौशल माधवी का पीछा नही छोडता । मृदुला गर्ग यहा स्पष्ट करना चाहती है कि, कभी कभी एकतरफा प्रेम भी हताश नही होता है।

निष्कर्षतः

यह कहा सकते है की मृदुला जी की दृष्टीने में स्त्री पुरुष के परस्पर संबंध मे प्रेम भावना का होना सहज और स्वाभाविक है। प्रेम ही संबंधो का मूलाधार है। कौशल कुमार का प्रेमी रूप अधिक प्रखरता के साथ उजागर हुआ है । कभी वह स्त्री स्वभाव का , कभी उसकी आत्मग्रस्तता का , कभी उसकी प्रशंसा की ललक का, कही उसकी संपन्नता का फायदा उठाकर प्रेम के मैदान मे आगे बढता ही जाता है।

संदर्भ : -

1) चितकोबरा (अपनी तरफ से) : मृदुला गर्ग पृ. 07
2) मृदुला गर्ग का कथासाहित्य : तारा अग्रवाल पृ. 202
3) मैं और मैं : मृदुला गर्ग पृ. 13
4) वही पृ. 27
5) वही पृ. 30
6) मृदुला गर्ग का कथासाहित्य: तारा अग्रवाल पृ. 2